

नयान् उच्यते विप्रविश्याद्भक्तं सुखदुःखयति न गीरुगवान्नायकं पाथनायात् ॥ ॥
 जननी सर्ववृक्षानां सर्वविप्रसूयनी अगम्या सर्वदुष्टानां महाविद्यावसूप्रिया ॥ ॥
 सुखदुःखयति वसुधावाक्यी गार्थिश्च यथावसानिर्कं समस्ततथागतयो मा मरुया अर्वा
 हर्षना नाविद्युद्वलयादाउ ॥ समस्तमर्कदुःखकोउ ॥ ग्वक्त २ ॥ अद्यावत् २ अगः
 मयापह्नवलायादाउ ॥ समः ॥ सुयां प्रियरुयाउ विष्ठाक ॥ ॥ अस्यावधौ वली
 भूत्वा उच्यते हि यतिमानवा दत्रिधा व्याधिसाकारो न पटन्ति कदाचन जूयिकयाति
 उच्यति प्राप्नुवन् कनमंस्य ॥ हर्षथा ॥ अत्रमं ग्वनीया धनलीया ० मौ गेदं हां मा रं ॥

२

सनयास्य त्रागयारयसाकयारय ग्ववनं मालिअमघ हर्षसंयलिधनसां चिकनाया
 हां चिकनार्यय मरुयकविप्रविष्ठाक ॥ वकणी साक्ष सिद्धरुगवान् आह्लादसं विष्ठाक
 ॥ ॥ सुखदुःखदुःखयती रुगवान् ॥ ॥
 सुखदुःखयती रुगवान् ॥ ॥ याकपाथनायात् अमापत्रमं ग्वनीधयाक्रोगेथ
 वाह अक्रपत्रमं ग्वनीध ॥ ॥ यापूजाविधान गेथ मालाउवान् अमंसं वृजि
 नमुह्यपसन्नरुमालधक सुखदुःखयतिं गीरुगवान्नायकं पाथनायात् ॥ ॥
 रुगवान्नाह ॥ रुगवान्नाह ॥ रुगवान्नाह ॥ रुगवान्नाह ॥ रुगवान्नाह ॥ रुगवान्नाह ॥

वापिनिधसम॥ थुगुतरदं सुवदुदपतिपाथनायाक खडाउ रगवानं आह्लादस
 विष्णुग, ह सुवदुदपति छु छु कक दामागं संशान उद्वात्रया उनिमिदि किनक
 नरं दंडा, अक्रपवमं गवीशयू गथिं स्वर्गमल्ययातालयां मासइयाउयां
 धधर्मइयूगथिं सत्व प्रासिदक उद्वात्रइयू थथिं कपवमं गवीया
 पूजायाउ विधिपूर्व किनक नरं दंडा ॥ ॥ दंग यिथा मिहं साधु सु
 वसनसिधमया यनविहान मा गं सर्वसंपदिमापुयाश ॥ **यूनवर्त रुचं सुवद**
 गुरुपतिया खाल स्याउ रगवानं आह्लाद र विष्णुग, ह सुवदुदपति छु

3

नमनसु वयाडाउ छु छु सगपाग खेम वृद्धि वक्रखडा थुगुनिचिरुगीनत
 मरं कून ग्वक सनं थथिं उत्रिह मगावरातल उक्त याग संपूर्ण तउ चरिह
 आदि नवनल धेयू राज सपे किं ह्यादिलायू ॥ ॥ तविहं ० यकिदवा आया
 धिताः य्याधिमागव ग ॥ अपूणालरातपुण सधनालरतंधर्त ॥
 रुनां आह्लादस विष्णुग ह सुवदुदपति ग्वक रं गी वसुधा वाद
 विप्रवत धनवपं वाति उ ॥ उक्त स मसक दव मनुष्य रत पुन
 ॥ येनवादि गतं सुतानं मावकं मरुतं तोतोयाधितकलं सां योधित

१ गव्यार्थापुत्रमदशाउवाच

पीठलथमरुडा जुधवा सक्तानमइ क्रयासक्तानदयुख महादविदइ
याडावातमा महाधनाग्रइयाडाशागवकइ युधथिगवतथधकं गुही
वित्र॥ ॥महाधनामहाशास्य सपन्नपनिवात्रकै४ किमेववइ तावाकं स
प्रयययकाजिही॥ ह मरुदगृहपतिधधर्मयापरावंतथथिग
पदाथेलासंलिमहा रागमानिइयाडा काय क्कायक १५५
थंरयातिनीपनिधकां पूलेयाडाडा महाजुतद ननुकनपं वा निअ
रुलखअुदिककुला १ ६६ममनरुललाकधकरगवाननजुहावि

लि॥ ॥यथकविधिनायनवतंवापिवधनयं रुकूलाउयदोमासिरुगीयानि
धिसारनं॥ गव्यमनरुनं यनभेधनीवसुधामादेवियावत गथविधिमाल
थंउगुलिविधिं लाउवकू रुगीयाकू गव्यसंनवतदनु ॥ ॥माघदे
तथमरु रुगीयाया विधयेत१ मासिमासिरुवलेन सदाह
वर्गवत्र॥ अथवा मा यरुगुगीयाकू रुव नयशपति सदाव
तधनवयु उक्रयाग थिह रुलमायु ॥ ॥रुलपूगवाथवापुगी विरुवा
विदुतीतथ उपाजिकउपाभीव अयापियवजातया॥ ॥हगृहपति

धर्म तडा २ सतपागुनया धर्म श्या उवां महा कुलवक्तनं कुलवक्तया मुनि
 तता धं विद्वनं विद्वनीनं उपासं उपासिक यानि सनं सवता २ जातिनं वत
 धवलपतडा धक सुत्र दृष्टपतियोत रुगवानं आदोदसे विष्णव ॥ ॥ पान
 वृद्धयतीर्थगत्याः नयकात्रयम् मलसात सुविना मरुसात सु
 कात्रयम् निरिआवम नयकात्रयम् मलसात सुविना मरुसात सु
 डा सानया दाडा आयमनया दाडा पत्र गयकायाडा पत्र भवये ॥ ॥ सुवि
 मयुयम दृष्टं जीवता नरुकि वसत्र तीर्थदकं वरुषु मं यूनव सुम दृष्टं

न ॥ दृष्टं दृष्टं धर्मिन् पत्र मं ग्री आशुत धत्रययात सुविद्वमुनतियाडा
 यत्र मं ग्री आरुकि सदातयाडा सीन सदा वरिडाडा मन दृष्टमानया दाडा
 दलख तीर्थयालीख दयाडा पृष्टु घटया दाडा सीन वमुन हि दाडा स्यपना
 याडा ॥ सुविद्वमो त नयेव यूष्टु मृदुतममुलं याष्टिकोथ स
 गृहवा पत्र गृहवा सूरु सूरु न चदनं न चरुन स ममुल कं दला स्यप
 पयकल संचां वरिचय विवगय ॥ द सुत्र दृष्टपति धर्मिन् पत्र मं ग्री
 या ममुल दयकं मगीलया प्रमृथित अडा गृहवा सवया गृहवा गन सुवि

अदरुदायानं काममिच्छावकायिकं ॥ दृष्टदृष्टि श्रमजीवनयादापापस्य ता
 दृष्टधनसा जीवात्मास्यान मवया मतदावशु क का ॥ परशु परशु नृप
 हनेयो ॥ श्रम अधात्रपाप ॥ ॥ वाविकं कत मवशु विधं मिखा बोदं ये
 सूर्यपाल सूर्य मूर्ति सिद्ध पत्राय (प्रति) ॥ दृष्टदृष्टि वचनं यादापा न
 पात्रता विधि कृच्छ्र म सखल्ला कृत्व वृत्तला ॥ मवया तगल
 वचन वि ॥ असखल्ला जडा जाकपनि हान श्रिंता पाप पदं मद्र ॥
 मान संकर म विविधं अविद्यायापाल मिच्छा दृष्टि (प्रति) ॥ दृष्टदृष्टि

मत्तनयादापापस्य ता दृष्टधनसा मवमात्रकलात्रय अयापालया ॥ अ
 हाननरात्रय दव गुनू व म मालालय श्रिंता पदं मद्र श्रम नैजि
 तापापडा जात्रदं तापाप मद्र ॥ ॥ उतं दमकृ गत्रापाप विवर्जनीया
 दमकृ गत्रातां कर्म रुतं नृप ॥ दृष्टदृष्टि श्रिंता पापमा
 लायात पूर्वजर्मन यावेजिन संकप मागकन दंदा ॥ ॥ पा
 लमिपार्ग अयायु ॥ मवया जीवनिता तत्रा ॥ जीवकायान आयु म
 दश कृ न आयुशर्ल ॥ ॥ अदरुदायानी असागेद विदगा ॥ मवया म

पलि दानयादान नयसु द्वा संकष्टकयाउा महादविडइल ॥ ॥ काम
 मिश्रमवावाग पिश्यसायो सुयुगादिविजागता ॥ पुनर्वीव हनैरगवानैअ
 हादत हगृहयनि मवयाकु गहनयादाया रुलन थअमीतिमउा सुयु
 गादिउा विजागइ ^{माभनालि} याउा इयू ॥ ॥ मिखोवादाइ ^{माभनालि} अवनननेउ ८
 सदासविरुतारुल ^{माभनालि} प्रियनामिगसदकलरुषिपरिस्थाग ॥ हगृ
 हयम असखवहायापाप लोकन निदनायायु कडापापन लोक
 नअमाययायु जाककउा हायापाप सदासर्वकारे अयागृहस कलह

विपरिहिन गालगिउा मषु विपरिहिनइयू ॥ ॥ घालकाका ^{अम} नारुअ इर्नध
 असंरिन्नपवापाग अनादयवाकोलोकषु रिन्नरुल ॥ हगृहयम मवमय
 यार्थ वालावचनेविद्यायापर्म थअमनयाथअसुखमदस लोकन नि
 यादमयायु मवरु ^{पेन इयुगार} यापापन काकवचनेइस लोकसे रिन्नया
 हाउा सुखतयाउा न ^{पेन इयुगार} य ॥ ॥ अविद्यान अहानमूर्खरुल आपा ^{माभनालि}
 दा निवने ^{पेन इयुगार} अमादीतवम मिथुअ दृष्टिनीवहीनजातिषु उत्पलिरुल ॥
 हगृहयनि थअअधिका नमइयु अयादाहल हानमदयाउा अलइयु
 अयापाल

रुन्व मवस्माय सावपायारुल तउं २ लोकव वीर्मा लागकाउ आपदाउ
 नाकाउ इयु रुन्व सखकादायापयं दारिद्र इयाउ हीनजाति कुल
 मऊमो इयु ॥ नस्माद्वमकृणलं यत्रित्यजित्ता वरं धनय ॥ दं गृह्य
 ति युनियामिहि ~~मनिमनि~~ जिगापायं तालताउ शिव
 सूधनादवीयायत धनलपि कृति धत्वर्थं दं निष्ठापनि ध
 यादां न अपापधक सियाउ मनसा वावा कमाना एकत्वयादाउ गी
 वसूधनाया वगधनवपिउं पयगुहं सिष्ठापनि धर्म साविकउ नाना

६

तत्रहया लाक दंउं ग्वकम्वर्क वमीत्मा पापात्मा पूर्वकर्मया जिगापाप
 या धर्मया रुलंन माना नूधनाय उत्रिय प्रीति अपीति जिनंद वि
 याट उच्च नीव रुलंन अज्ञान कत्रह आपदा कर्कग अ समरु लोकयाइ
 क पूर्वकर्मयारुलं थकाइलधक गीरगवाने सुखदृष्टयनि
 यात अहाद सविश्व ता ॥ समंवाहयंउं मीरदर्म अवार्यपाः
 धाय दिगदिगलाक धीउं संनिप्रतिता वृद्धा रगवन्ता वाधिसलाय अहमम
 कंतामा वृद्ध धर्म सद्य प्रगत्रलंगदामि ॥ दनाथदगुन गधकनयात्र सनअ

[illegible]

रुन्दं सप्तमं प्रालियार्त्तं उपदेशः । विद्यायाः उद्घात्रया स विद्या कच्छलं ॥ ॥ अस्मादि
 ०० रुजं मनि रुवाक रेवू, मया पापकं कर्म कृतं । अकावितं वा अनूमादिनं ततः
 सर्वं एकधः प्रिउ ०० वा गुल ०० वा ॥ रुनाथ रुगुनु, जिमिपन रुधु रुर्मया पापद
 गसां धुगुलि रुर्मया पापद गसां मिसं मसिसं, वसं सिनदन धुर्म
 यूर्नु यादाया पापन धुगुलि रुर्मस कर्म साग लात धुपापसं यूर्नु
 गवल मूठाउ लठाउ धुवस धुमदवीया धर्म नमायकाउ विम विद्या रुन ध
 क पाथना याग ॥ ॥ शिवसुर्थवयाः ॥ अणुगुमूवृद्ध वाधिसन्ध्यातिकं सर्वपापः

पतिदभयानि। याननसमनं प्रतिष्ठावयामि॥ हनाथदं गुनु, धक गुनु हउतं जीन
 हाउ, गथजानिकं वृद्धहउतं वाधिसखपति सन ससात्रडकाव, नितिहिन धर्म वास्व
 धर्मप्रवलयान् अर्थसिध्दयमिसं गुन्याकयाथनायात जिमिसन, सिसमसिस, याव
 याका, जिमिसततालन धना धर्मसमनपं गुन्यामनालोन ॥ ॥ नि
 खगीत वादिनं मालाः गन्धविलयनं कर्तुं कक मदासयनं स्वर्तु नूया
 दिशदकं॥ **हमिष्यपति** जीवसुधावाद विद्या वतधनपं इलहाउ, याखनः
 इय नानावाद्यधौ, महान् स्नानमालनकखाउ नानाप्रसाक, विकनं प्रयतया
 उ, हर्ष, नाना रंगउसतनगीउ गाजाउ आसनस वानत्, उहा, आदिधं, नाना

वशुकया, तिसानतिग धसधु गुतालनमाल ॥ मांसातिर्षहात्र प्रत्यतेप्रभवत्र
 सुगपानाधिकं पशु विप्रमं वगधालेक॥ **हमिष्यपति** हर्षं ना हा मद्य पवदस्य
 वि, विकं, धसंधु, कायगउगु वशुक नैवै गजिवग सानं ल्यादि, धतताल
 गाउ, ग्यनसं धवगध वलया उक्रयात अवर्ध, मनावथपुर्तुइउ
 ॥ ॥ अथवायावाजी वं यावन्नागीममिनी यावत्सुश्यादयाकनं ॥
 वर जीवसुधावाद नं उकायमानसन समोक्षत्रय ॥ **हमिष्यपति** इलारुन
 सा ग्वनागी जीवमवहनावान्, उअधवा, मरुतसा, धनियानगीउ हाउ, क

कसयासूर्यो उदयमहोत्तरं जीवसु धनं वतस्य कविमनधवलपि ॥ ॥
 पुत्रस्य सगंधजलेन उरुवाहिमुखं स्नानं कृत्वा सुविमलवर्णं पायसं पूजयन्
 सकिमानसः ॥ हनिष्यति स्रथं द्वावा उरुवाहिमुखं यादा उ न सा त्वर्लखने
 स्नानयादा उ सुविदधु मरिया उ र कि स द्वा ग या उ पंजा या उ ॥ ॥ १२
 यथा क धा व नी नित्यं स विच्छिन्न प १० सू धी कामार्थं सम्यदा नित्यं पुनः
 कृवन् दा र व न ॥ ह निष्यति ग्य क १ व द्धि व न्द पि स ध प व म ग्नी या धा व
 ली म नु म दि स य व य उ क यो त प ल क ल जी व स धा व द वी न सम्य सित्य
 नित्यं १

२ × ०० तिथी वसुधवा वतस्य कथं समाकश ॥ २

सूचदुग्धपतिमात

पूर्ययादा उ वनदानं विष्णाय धक श्रीरगवानं श्रीहृदयकगुहं जित ॥ ॥
 तितकदा ॥ ॥ ॥ ॥ अतः न ज म नु ल द्य का उ स्नान वा क ॥ उ व स धा ग य द्वा क विमल
 स्वाहा ॥ उं सर्वविद्यानुष्ठापे हं ॥ स्नानवाये ॥ उं व स धा ग य द्वा क विमल
 ॥ दा त स ॥ उं व ज ध न स ग न निधायाय न धा ग गाय व ज यू र्ध पति ह स्वाहा ॥ ध
 म ॥ उं श्री आ र्थ त्र ला कि ग यै न गाय व ज यू र्ध पति ह स्वाहा ॥ त व स ॥ उं श्री आ र्थ व
 या ॥ व ज यू र्ध पति ह स्वाहा ॥ ज उ म ॥ उं ०० लां द्री य व ज यू र्ध पति ह स्वाहा ॥ ह व न ॥ उं
 ज स न ज ल दाय व ज यू र्ध पति ह स्वाहा ॥ त व उ का ल स ॥ उं श्री १५ १५ १५ ल न ग ना

॥ श्रीगुरुमादवी अस्त्राला ॥ जगत्पति ॥ श्रीगुरुमादवी अस्त्राला ॥ स्वामी ॥ १ ॥

[illegible]

13

५१२५ ३

[illegible]

३ धनकैलसिजय॥ उं सुवेजलुडायसाहा॥ धन२॥

ॐ शिवमूलमलंदायकुं नमः ॥ क्रियसिद्धयर्थ ॥ धनवृद्धयर्थ ॥

अथ ॥ ॐ वसुधैवा कुतस्तथा ॥ १ ॥

॥ उं गी आये वसुधायै वाङ्मङ्गलं कवचं वसुधायै स्वाहा ॥ वसुधा सया दानं ग ॥ धनं अर्थ
 को सक्त ॥ युति ॥ वसुधा वासुधा नत्वा दात्रिडा लुप्तता वली ॥ साधना यायका पद
 प्रप्ता सिद्धि वनयदा ॥ धनं अर्थ यागक ॥ उं समय सोम्य समय कत्रिमदा समय
 स्वाहा ॥ उं उर्क उर्क वसे • ली यवर्षनी निष्ठा उनी जीवसुधाय अर्थ पतिष्ठ १४
 स्वाहा ॥ कृष्णका विगमनुमा दिना हिमं दाया ना मन्त्री वशीव सुधाय वाहा दानका
 यवत्र एकमला य अर्थ पतिष्ठ स्वाहा ॥ धननी यच्छ दौ खानवा यको ॥ द्रौल
 मिस ॥ उं नमा वल्लगयाय गगजीवं सर्वकली हलहस्त दिव्यवृष जीवसु

दानपत्र धर्म (मोहि सनन च विना नाना
 कन धन लक्ष्मि दानेन सु

१ नी यवर्षनी
 वागक ॥

शी २

अत्र वसुधायै वं कवी गमनिं कत्रि यष्टि कत्री मम कार्क सिद्धि कत्रि स्वाहा
 ॥ अ२१ ॥ यं ला द्यं शु ॥ ॥ धनसाह का लवा गत ॥ ॥ उं सोम्य वृषमा
 दा ॥ उं गी दिव्य वृष स्वाहा ॥ उं दी फ वृष स्वाहा ॥ उं गी वृष स्वाहा ॥ उं गी हान वृष
 उं गी यक्ष वृषा नमि त स्वाहा ॥ उं गी वज्र सत्त्व हृदय स्वाहा ॥ उं गी मूल उ स्वाहा ॥ उं
 उं गी मूल उ मति स्वाहा ॥ उं गी मंगल स्वाहा ॥ उं गी समंगल स्वाहा ॥ उं गी मंग
 लमति स्वाहा ॥ उं गी आन स्वाहा ॥ उं गी अलेश स्वाहा ॥ वी वलेश स्वाहा ॥ उं गी

वाणी का उम नम ॥

ॐ यत्नलस्वाहा ॥ ॐ श्री उद्वाटनिस्वाहा ॥ ॐ श्री उद्वादिनीस्वाहा ॥ ॐ श्री मलयवतिस्वा
हा ॥ ॐ श्री संस्रवतिस्वाहा ॥ ॐ श्री वनवेतिस्वाहा ॥ ॐ श्री वनवेतिस्वाहा ॥ ॐ श्री २
मतिस्वाहा ॥ ॐ श्री यशामतिस्वाहा ॥ ॐ श्री मूलस्वाहा ॥ ॐ श्री विमलस्वाहा ॥ ॐ
श्री नृमस्वाहा ॥ ॐ श्री निर्मलस्वाहा ॥ ॐ श्री मलनामनीस्वाहा ॥ ॐ श्री स
नृयस्वाहा ॥ ॐ श्री अननष्टस्वाहा ॥ ॐ श्री विननष्टस्वाहा ॥ ॐ श्री धिननष्टस्वाहा
॥ ॐ श्री विश्वकमिस्वाहा ॥ ॐ श्री मुद्रसिलस्वाहा ॥ ॐ श्री विश्वनिविस्वाहा ॥

१५

ॐ श्री विश्वनृयस्वाहा ॥ ॐ श्री आवमतिस्वाहा ॥ ॐ श्री आकर्षतिस्वाहा ॥ ॐ
श्री अंकस्वाहा ॥ ॐ श्री मंदुस्वाहा ॥ ॐ श्री परिक्रस्वाहा ॥ ॐ श्री अमाद्या
कमजः ॥ ॐ श्री १०० ॥ ॐ श्री सिद्धिप्रवर्धनिस्वाहा ॥ ॐ श्री पुत्रमतिस्वाहा
ॐ श्री निविप्रस्वाहा ॥ ॐ श्री नृमस्वाहा ॥ ॐ श्री धिप्रिप्रस्वाहा ॥ ॐ श्री वृमस्वा
हा ॥ ॐ श्री उतत्रतत्रस्वाहा ॥ ॐ श्री खलमस्वाहा ॥ ॐ श्री तनीत्रस्वाहा ॥ ॐ श्री ता
नोत्रयशुमा रागवती वसुधावातामधवलिसहानका वलशुक्तिंकलि

स्वाहा॥ उं श्री वज्र वज्र स्वाहा॥ उं श्री महा वज्राय स्वाहा॥ उं श्री आवरुनी स्वाहा॥
 उं श्री पुवरुनी स्वाहा॥ उं टर्क २ स्वाहा॥ उं श्री ० कर्क २ स्वाहा॥ उं श्री उर्क २ स्वाहा॥ उं
 श्री रुर्क २ स्वाहा॥ उं श्री वर्य लि स्वाहा॥ उं श्री पुवर्य लि स्वाहा॥ उं श्री तिर्या हु ति
 स्वाहा॥ उं श्री वज्र धर सा गत्र नि धा य त था ग त स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥
 उं श्री त था ग त स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥ उं श्री वज्र स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥ उं
 श्री धर्म स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥ उं श्री रं द य स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥ उं श्री गु

१५

र्वि ली सु ख न य सु नि म हा ग रा श्री स्वाहा॥ उं श्री महा मं त म ति स्वाहा॥ उं श्री
 महा य ष्ठि म ति स्वाहा॥ उं श्री सर्व रु तं व म क रि स्वाहा॥ उं श्री सर्व इ ष्ठ मि कि
 रु ति स्वाहा॥ उं श्री सर्व स क वि ना म नी दं रु ट्वा हा॥ उं श्री आ ग ङ्गा ग
 ङ्गा म य म नू स म रं स्वाहा॥ **य त्रि यु र्दं** ॥ उं श्री व स ध म रं स्वाहा॥ उं श्री व स ध
 म रं स्वाहा॥ उं श्री वज्र ध म रं स्वाहा॥ सा ग त्र नि धा य त था ग त य स्वा
 हा॥ उं श्री ० ला द वी य स्वाहा॥ उं श्री य म ध म रं स्वाहा॥ उं श्री वज्र ध म रं स्वा

हा॥ उं गी ऊं रं उलं दाय स्वाहा॥ उं गी रुं रं याल नागवाजाय स्वाहा॥ उं
 गी गुं काये स्वाहा॥ उं गी मृगुं काये स्वाहा॥ उं गी वृं दका नाये स्वाहा॥ उं
 गी स्रं स्वये स्वाहा॥ उं गी मौं मा निरुं दाय स्वाहा॥ उं गी यूं रं दाय स्वाहा॥ ११
 उं गी धं नं दाय स्वाहा॥ उं गी वैं शं मनाय स्वाहा॥ उं गी विं विं कुं न्निन
 स्वाहा॥ उं गी कलिं मानं स्वाहा॥ उं गी मुखं दाय स्वाहा॥ उं गी वृं दाय
 स्वाहा॥ उं गी मं दालं श्रीं रुं रं नि वासिनीय स्वाहा॥ ॥ साकं नृप॥ ॥

॥ यंत्रायदायप्रज्ञा ॥ शुक्ति ॥ अगवनिवप्रज्ञानं ॥ ज्ञानंमूर्तिनमाभिगगः
लगतिमनाहं भावनंतिर्यग्गतिः ॥ अमंमगुलानिधनं कायनं प्रवद्वटं
वद्वटं नधनममुद्विष्टागं प्रवद्वटं ॥ वलिमदु ॥ अगवप्रज्ञा ॥ अमं व
लि गटं २ त्वं १ खादि २ दानयतं धर्मगति संमदकामा भक्तिपुष्टि
प्रज्ञां कुरु स्वस्ति स्वाहा ॥ ॥ यंत्रायदायप्रज्ञा ॥ शुक्ति ॥ खानता ॥ क
ल्यादि तनेयलियथमाना याधप्रया विविधनतप्रयुक्तमया धर्मुक

٧٢

तत्कं॥ कातलज्जा इत्यानविश्या॥ निगायउलंयालनशाचक॥ ०५॥
 ॐ तिवसूधमावेविधि॥ ॐ॥ ॥ सनिकुद्रुद्रापादवयुजाम
 जातथ्यं धृतदाउ॥ ॥ यतधनमनिपतिधर्मदनक॥ ॥ स्वहतिः
 कन॥ ॥ थकांलिनं ॥ ॥ थकांलिनंमपुलंथलकं॥ ॥ सिध्याधिदा
 सन॥ लादागिलका॥ थकांलिनमपुलकं॥ ॥ स्वानतन॥ औसताकल
 आशिर्वाद॥ ॥ थनवतकाभालतकं॥ ॥ लखकउलूतयवदनधि
 धिस॥

॥ वसुधा कर्माणि ॥ अतनवृत्ताऽसंख्यं न ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥
 ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥
 ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥ अतनवृत्तं न ॥

१७

सिधोऽयम ॥ ५८ ॥

॥ सति कुरु खकत ॥ यावत् जीवन्मृतं सत्त्वं न भवति ॥ ॥ रुनिष्ठापनि
 ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥
 ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥
 ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥
 ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥ रुनिष्ठापनि ॥

पाउनानाधर्मयाखंडडाकडाउसीसानउच्चनिहडागुलिसवलनपाउ। मदाहर्ममा
 नयाडाउधवलपिधक गुनसनलिष्यमागजा। क्लादशविष्णु॥ ॥ षट्कुजापी
 गवकु। एकमुखाननम कतिली सधपथमकुजननिधिवनदं द्वितीयन
 वनमऊली लतीयनन थागतवदना। वामपथमकुजनरुदघटद्वितीः २०
 यनधामयमऊली लतीयनपक्कापुक्ककधनली॥ वलितासनासर्वालीकानरु
 पिता। नवजीवनसंपन्नारुगवतीवसधनार्द॥ ॥ रुनिष्यपनिधमपवम

ध्वनीरुयगधिं अतिसूदनी दृष्टातखाल क्षासुवकुइयाउवां वनमकूतनपयाउ।
 वृकालादागधवलनयाउविष्णुक दृष्टाउउलाहार्त वनदमूदातयाउ। वन२
 यागकुगुमाल उगु२ध नदय ०० त्यादिनवलवियाउविष्णुक हनानि
 कालादागन वनमऊ लित्ताडाउ। वन२ यागनउवनवियाउविष्णुक
 हनानि कालादागगुलिं सधगतयातनमुक्कावयाहीविष्णुक। हनंदलपायामु
 कालादान मंगलगुकलयाउ। डाउ। ससायागमंगलयाडाउविष्णुक हनानि

कालादातगुलि वायुयीजाडाउ जीवात्मादकार्म उद्धानयाडाउवां दनंस्वकालादा
 तसपह्नापूरुके धावतीजाडाउ अरुनदूतकाडा अरुनगुवियाडाविष्काक॥
 नांयुपाकुति काताउल लितामनयाडाउ अनकवन्नया तिसाननियाउ
 जीवनमपन्नइयाउ अ तिमनलि तिमयदयावेसइयाउ अतिसाराया २१
 मानयाडाउविष्का थर्धिन्नपत्रपत्रमन्त्री वसूधामादवीया सवायाउ पूजाया
 उवतधनपि थुगुलाकयसख सयकिलायू पललाक १ उन्नपत्रमन्त्रीयाख्या

नग मा कपदलायूधक रगवानं सचदुगृहपनियात अरुनदयकागुखंडूयूला म
 इयूलाधक सदिदतयमतधक ॥ वृंतिग्रीवसूधानावतसंकयकथासमाफ॥ ॥
 धनवेगका गालगक ॥ ल खड्डुलत ॥ वजनधि ॥ वतकाता ॥ चतनवूलाउ
 मलुलसग ॥ धनवकोने तस्यअर्धयो १ ह्यायागुलिर्न निष्ठाधिवासन ला
 दाऽनिवका ॥ सूरकाजानक थकालिनमलु लथिल खानतन विसर्जन ॥ ॥

आशा सरकारी

3

2025 RELEASE UNDER E.O. 14176

(सति कुरु त्वकन ॥ ॥ यावच्चैव जीवच्छ्रद्धा न स कर्म वा अक्षानुम
 कं ॥ इति ध्यायति इति स न रुला रुतसा जीवेन वद वय मयं ध्वज न ध्वज लपि
 मृध वा स रुतसा अक्षानुमद्विना ध्वज लपि ॥ ॥ उक्ता यमानेन न ध्वजेन ताव
 न वसुधा वया पूरु कर्मातिदर्व्यं पालिवच्च परिवर्त्याग शिकाः
 यक ४ समस्त नानाः धर्म कर्तृत्वा वत्सदं वज्र सुवत ॥ इति ध्या
 यति अर्थिं जीवच्छ्रद्धा दविद्या यत जीवा उवाचै पालिदकाया जीव
 काय मइ गे १ थ थ उ आत्मा अर्थ मितया आत्मा इति लाल पा उ नाना धः

२ या यदस्मि दत्ति.

१ महाहर्ष मान्या हा ३।

(कलसंन्यपाज्य-

॥ सप्तमं त्रयं विना लसविजया २
कमित्यर्थे कलसस्वर्णगुण्ड मन्त्रिलाया
सति वृत्तं १ रुद्रायमानधूका रुमात्रि
रुमारिरुजा ३ ४ ५ जलमहिषा प्रका
ग्रह्यात ७ धिवार्त्तमाल
८ कुम्भिका

30